ग्रन्थमाला 'गुरु' : खण्ड ३

गुरुका आचरण, कार्य एवं गुरुपरम्परा

भूमिका

'ज्ञानियोंके राजा गुरु महाराज' ये शब्द हैं सन्त ज्ञानदेवजीके । जो ज्ञान दे, वह गुरु ! शिलासे मूर्ति बनाई जा सकती है; किन्तु उसके लिए कुशल शिल्पकारकी आवश्यकता होती है । इसी प्रकार, साधक तथा शिष्य ईश्वरको प्राप्त कर सकते हैं; किन्तु इसके लिए गुरुकी आवश्यकता होती है । गुरु जब अपने बोधामृतसे साधक तथा शिष्योंका अज्ञान दूर कर देते हैं, तभी उन्हें ईश्वरकी प्राप्ति होती है ।

साधक एवं शिष्योंको साधना करते समय क्या करना चाहिए और किसका परित्याग करना चाहिए इत्यादि का ज्ञान गुरु करा देते हैं । यह गुरुका कार्य ही होता है । केवल उपदेशसे नहीं, अपितु साधारण प्रतीत होनेवाले बोल-चालसे भी वे बहुत कुछ सिखा देते हैं । साधक तथा शिष्यों को गुरुके बोल-चालका भावार्थ समझमें न आनेपर वे उनके अनमोल विचारधनसे वंचित रह जाते हैं । प्रस्तुत ग्रन्थमें गुरुके आचरण (उदा. गुरुका सामान्य संवाद, गुरुका क्रोध करना) एवं उनके द्वारा की जा रही शिष्यकी सहायता सम्बन्धी विवेचन किया गया है ।

शिक्षक, देवता एवं गुरु में क्या भेद है ? गुरु अपने पश्चात किसे गुरुपद देते हैं ? 'भारत' विश्वका 'आध्यात्मिक गुरु' क्यों है ? आदि का भी विवेचन इस ग्रन्थमें किया गया है ।

सन्त ज्ञानदेवने प्रार्थना की है कि 'हे गुरुदेव, आप ही सभीकी बुद्धि प्रकाशित करनेवाले श्री गणेश हैं ।' ईश्वरसमान श्री गुरुद्वारा शिष्यकी बुद्धि प्रकाशित हुए बिना शिष्यको गुरुसे ज्ञान ग्रहण करना अथवा सीखना सम्भव होगा क्या ?

'इस ग्रन्थके द्वारा जिज्ञासु, साधक एवं शिष्यों को साधनाके लिए आवश्यक ज्ञान भलीभांति आत्मसात करना सम्भव हो तथा उनकी यात्रा शीघ्रतासे ईश्वरप्राप्तिकी दिशामें हो', यह श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है ! **– संकलनकर्ता**

सनातन संस्थाका आधार आध्यात्मिक होनेसे ही इसका कार्य तीव्र गतिसे बढ रहा है !

'सनातन संस्थाके संस्थापक प.पू. डॉ. जयंत आठवले जी ने अध्यात्मप्रसार कर समाजमें बडा परिवर्तन लाया है । सनातन संस्थाका आधार आध्यात्मिक होनेसे आज इसका कार्य बढ रहा है ।' **– श्री. प्रमोद मुतालिक, अध्यक्ष, श्रीराम सेना.** (दैनिक 'सनातन प्रभात', ९.५.२०११)

शीघ्र गुरुप्राप्ति एवं अखंड गुरुकृपा होने हेतु उपयुक्त सनातनका ग्रन्थ !

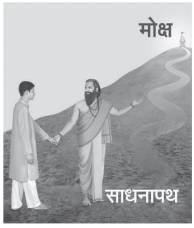

गुरुकृपायोगकी महिमा

गुरुकृपाके माध्यमसे जीवको ईश्वरप्राप्ति होना, इसे 'गुरुकृपायोग' कहते हैं । इस ग्रन्थमें 'गुरुकृपायोग अनुसार साधना'के सिद्धान्त, चरण इत्यादि की अभिनव जानकारी दी गई है । गुरुकृपा हेतु व्यष्टि एवं समष्टि साधनामें समन्वय साध्य कर साधना करना तथा उसके लिए आवश्यक गुण आत्मसात करना, इसका भी विवेचन किया गया है ।

अनुक्रमणिका

[कुछ वैशिष्ठ्यपूर्ण सूत्र (मुद्दे) '*' चिन्हसे दर्शाए हैं ।]

१. शिष्यको ज्ञान देनेकी दृष्टिसे गुरुका महत्त्व १२

२. गुरुका आचरण १२

२ अ. सामान्य आचरण २ आ. सन्तोंके प्रति आचरण १२

३. गुरुका कार्य ३१

३ अ. अध्यात्मप्रसार ३१

३ आ. वास्तवमें क्या गुरु कुछ करते हैं ? ३७

४. भण्डारा ४२

४ अ. अन्नदान ४ आ. सेवा ४२

४ इ. त्याग ४ ई. दूसरोंके प्रति प्रेम प्रतीत होना ४३

४ ऊ. सत्संग ४३

५. भ्रमण ४४

५ अ. उद्देश्य ५ आ. शिष्यको होनेवाले लाभ ४४

६. तीर्थयात्रा ४६

७. गुरु एवं अन्य ४७

* गुरु एवं गुरुके परिजन * शिक्षक एवं गुरु ४७

* प्रवचनकार एवं गुरु ५१

* सर्वसाधारण व्यक्ति, साधक एवं गुरु ५२

* सन्त एवं गुरु * ईश्वर एवं गुरु ५२

८. गुरुको बुद्धिसे समझना असम्भव होनेके विविध कारण ६०

९. गुरुकी अन्य गुरुसे तुलना करनेसे साधनामें उन्नति न होना ६१

१०. गुरुके दृष्टिकोणसे गुरु ! ६४
* गुरुपदपर गुरु किसे आसीन करते हैं? ६४
* अपने गुरुपदसम्बन्धी विचार ६५
* अपने बोलनेसम्बन्धी विचार ६५
* आशीर्वाद देते समय भाव ६६
* गुरुका शिष्यभाव ६६
* गुरु-शिष्य नातेके प्रति दृष्टिकोण ६६
* गुरुके दृष्टिकोणसे गुरुपूर्णिमा ६७
* गुरुपनका दायित्व ६७
११. गुरुपरम्परा ६७
११ अ. शिष्यको होनेवाली सहायता ६७
११ आ. परम्परा खण्डित होना ६८
१२. गुरुकी गद्दी एवं गुरुपादुका ७०
१३. गुरुओंकी संख्या एवं भारतका महत्त्व ७१
१४. गुरुकृपायोगकी अन्य योगमार्गोंसे तुलना ७२
卐 गुरुसम्बन्धी आलोचना अथवा अनुचित विचार एवं उनका खण्डन ! ७६

आदर्श शिष्य बनने हेतु मार्गदर्शक सनातनका ग्रन्थ शिष्य

'शिष्य' वह है जो गुरुके मनकी बात जानकर तदनुसार आचरण करता है ! शिष्य बनेंगे, तो ही गुरुकृपा होकर ईश्वरप्राप्ति होती है । शिष्यके गुण, आचरण, भाव आदि सम्बन्धी साधकोंके लिए मार्गदर्शक ग्रन्थ !